# अध्याय 1

प्रस्तावना – शिक्षा प्राप्ति का अर्थ केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नही हैं, अपितु सर्वांगीण विकास की अवधारणा को पूर्ण करने वाली शिक्षा ही शिक्षा है । शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक / बालिकाओ मे परिस्थितियो के अनुसार अनूकुलता स्थापित करने की क्षमता का विकास करना है इसी उद्देश्य को लेकर विकलाग बच्चो मे स्वावलबन एव समानता का विकास करने के लिए विकलाग बच्चो से समेकित शिक्षा योजना लागू की गई हैं । इस योजना से समस्त प्रकार के विकलाग बालक / बालिकाओ को शिक्षा की मुख्य धारा मे जोडने का प्रयास किया जा रहा है । विभिन्न प्रकार के विकलागताओ मे दृष्टिहीनता भी एक विकलागता है। कोठारी आयोग (644) के अनुसार स्वास्थ्य मत्रालय के किए गए एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार तथा रायल कॉमनवैल्थ सोसायटी फार द ब्लाइड लन्दन के भी अनुमान के आधार पर यहा हमारे देश मे लगभग चालीस लाख दृष्टिहीन हैं, जिनमे स्कूल जाने योग्य उम्र के दृष्टिहीन बच्चो की सख्या चार लाख है । 13 मई 1986 के अमत प्रभात समाचार पत्र के अनुसार दुनिया मे चार करोड बीस लाख दृष्टिहीन हैं, जिनमे एक करोड बीस लाख दृष्टिहीन अकेले भारत मे हैं, इस प्रकार दुनिया के एक चौथाई दृष्टिहीन केवल भारत मे है।

एक समय था जब दृष्टिहीनो के प्रति हमारे समाज का दृष्टिकोण बहुत ही कारुणिक था जैसे स्पार्टन मे माता–पिता अपने दृष्टिहीन बच्चो को भूख से मरने के लिए छोड दिया करते थे। समय के साथ जागरूकता आने से दृष्टिहीनो को समाज का हिस्सा समझा जाने लगा तथा उन्हे शरण स्थान दिए जाने लगा। इन शरण स्थानो पर उन्हे उपचार, शिक्षा, भोजन तथा सरक्षण दिया गया। समाज के इस बदले (परिवर्तनीय) दृष्टिकोण ने दृष्टिहीनो को उनके अन्दर छिपी अद्भुत क्षमता को न केवल शिक्षा के क्षेत्र मे बल्कि अन्य क्षेत्रो मे प्रदर्शित करने मे सहायता प्रदान की । दृष्टिहीनो की इन विशिष्ट उपलब्धियो ने समाज को दृष्टिहीनो के प्रति परोपकारी प्रवृत्ति को और अधिक विकसित किया। परिणाम स्वरुप आवासी तथा पब्लिक विद्यालयो की स्थापना प्रारभ हुई, दृष्टिहीन बच्चो के लिए प्रथम विद्यालय 1784 मे खोला गया तथा उपलब्धियो ने इन्हे सामान्य बच्चो के साथ सामान्य शिक्षा प्रणाली का जन्म हुआ। हेलन कलर तथा लुई ब्रेल जैसे अनेक दृष्टिहीनो ने प्रतिभा के अनूठे उदाहरण प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया कि उचित अवसर प्रदान किया जाय तो दृष्टिहीन बच्चे भी न केवल सामान्य बच्चो की तरह ही शिक्षा प्राप्त कर सकते है, बल्कि विभिन्न खेलो का आनद ले सकते हैं दृष्टिहीनो के विकास की प्रवत्ति सामान्य बच्चो के समान है तथा वे सामान्य बच्चो की तरह प्रगति करते हैं ।

अत उन्हे सामान्य बच्चो के साथ सामान्य विद्यालय मे सामान्य अध्यापको की सहायता से शिक्षा प्रदान की जाती है, तो उसे हम ' समेकित शिक्षा ' का नाम देते हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ( सशोधित 1992 ) ने सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृष्टिहीन बच्चो की शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया ही, दृष्टिहीन बच्चो के सामान्य विकास तथा जीवन के सघर्ष का साहस तथा विकास के साथ सामना करने के योग्य बनाने के लिए आवश्यक है कि उन्हे समेकित शिक्षा के माध्यम से पढाया जाए । एकीकृत शिक्षा व्यवस्था तथा विशेष शिक्षा व्यवस्था के द्वारा विकलाग बच्चो को इस प्रकार शिक्षित करना चाहिए कि वे आत्मनिर्भर बने और समाज का उपयोगी अग बन सके तथा राष्ट्र की प्रगति मे योगदान कर सके, इससे उनमे हीनता की भावना दूर हो सकेगी । इस दिशा मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अन्तर्गत भारतीय शिक्षा के इतिहास मे पहली बार विकलाग बच्चो के लिए एकीकृत शिक्षा व्यवस्था का प्रावधान किया । इस शिक्षा नीति के अन्तर्गत ऐसे न्यून ( नाइल्ड ) विकलागता वाले बच्चो ( जिनकी उपस्थिति से सामान्य बच्चो की शिक्षण अधिगम व्यवस्था पर बुरा असर न पडे ) को सामान्य स्कूल के बच्चो के साथ शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान किया जायेगा तथा इन विकलाग बच्चो को उनकी आवश्यकतानुसार विशेष भौतिक व शिक्षा सुविधाएँ प्रदान करायी जायेगी ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ( रा शि नी ) 1986 के कार्यकारी समूह के अनुमान के अनुसार 'मानसिक रुप से पिछडे बच्चो मे केवल 1 प्रतिशत तथा दृष्टिहीन एव श्रवणहीन बच्चो मे अभी केवल 5 प्रतिशत बच्चे ही शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, अत इस विषमता को दूर करने के लिए विकलाग बच्चो को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त करने मे आने वाली बाधाओ को दूर करने के प्रयास किये जायेगे, जिससे वे जीवन की मुख्य धारा मे आ सके और शिक्षा के लोकव्यापी करण का लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सके ।

किसी एक ज्ञानेन्द्रिय मे खराबी हो जाने से उससे ज्ञान प्राप्त करने मे कठिनाई के कारण व्यक्ति के सामने अनेक कठिनाई आती है । जैसे दृष्टि चली जाने से केवल देखने सबधी कठिनाई ही नहीं होती वरन व्यक्ति की मोबलिटी भी कम हो जाती है । यदि उसे विशेष सुविधाए प्रदान न की जाये और उसे प्रेरणात्मक पर्यावरण न प्रदान किया जाय तो ऐसा व्यक्ति परिवार पर बोझ मात्र ही बनकर रह जाता है । अभी तक हमारे समाज ने विकलागो की क्षमताओ को स्वीकार नहीं किया है,बल्कि उन्हे दीनहीन मानकर दया का पात्र बनाये रखा है ।

उन्हे विशिष्ट विधियो से शिक्षा प्रदान करने तथा विकास करने के अवसर प्रदान नही किये गये हैं। यही कारण है आज भी हमारे समाज का विकलागो के प्रति स्वस्थ एव सकारात्मक दृष्टिकोण नही बन पाया है । समाज की इस बदलते दृष्टिकोण से अधिकतर शिक्षा शास्त्रियो, विचारको समाज–सुधारको एव विकलाग क्षेत्र मे कार्यरत व्यक्तियो का यह विचार अत्यत प्रबल है, दृष्टिहीनो हेतु एकीकृत शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए।

समेकित शिक्षा से तात्पर्य है कि दृष्टिहीन बच्चो को सामान्य बच्चो के साथ सामान्य विद्यालय मे सामान्य अध्यापको की सहायता से शिक्षा प्रदान की जाती है ।

भारतीय शोध मे समेकित शिक्षा अभी तक अपेक्षित सी रही है । इसके अतर्गत दृष्टिहीन विद्यार्थी समेकित शिक्षा पा रहे है या दृष्टिहीन विद्यार्थी के प्रति समाज का दृष्टिकोण या अभिव्यक्ति सकारात्मक अथवा नकारात्मक है इन शिक्षाविदो ने स्वय अन्वेषण कर निष्कर्ष निकाले हैं ।

विद्यालय मे समेकित शिक्षा से सबधित शोध कार्य भारत मे नगण्य ही हुये है यद्यपि विदेशो मे कुछ शिक्षाविदो ने इस दिशा मे अध्ययन करने का प्रयास किया है ।

(1) वे अध्ययन जो विदेशो मे हुये

(2) वे अध्ययन जो भारत मे हुये ।

टॉविन 1971 ने प्रशिक्षित एव अप्रशिक्षित शिक्षको का दृष्टिहीन विद्यार्थी के प्रति अभिव्यक्ति की समस्या का अध्ययन किया इस शोध का उद्देश्य प्रशिक्षित एव अप्रशिक्षित शिक्षको की सामान्य कक्षा मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन करना था । इस शोध मे बर्मिघम विश्वविद्यालय के 80 विद्यार्थी को प्रतिदर्श रुप मे चुना गया था । 21 विद्यार्थी को प्रशिक्षित शिक्षको के द्वारा सामान्य कक्षा मे शिक्षित किये जा रहे थे तथा 51 विद्यार्थी को अप्रशिक्षित शिक्षको के द्वारा सामान्य कक्षा मे शिक्षित किया जा रहा था । इस अध्ययन मे पाया गया की प्रशिक्षित शिक्षको की सामान्य कक्षा मे दृष्टिहीन विद्यार्थी के प्रति सकारात्मक कक्षा मे दृष्टिहीन विद्यार्थीयो के प्रति सकारात्मक नहीं थी अर्थात वे दृष्टिहीन विद्यार्थी को कक्षा मे स्वीकार नही कर पा रहे थे । शिक्षको तथा समुदाय के योगदान से उसका दृष्टिकोण विद्यार्थियो के प्रति सकारात्मक हो सकता है ।

( 2 ) इरविन ई जे 1993

इरविन ने विशिष्ट व एकीकृत वातावरण मे दृष्टि विकलाग बच्चो की सामाजिक सहयोग का अध्ययन किया । इस शोध का उद्देश्य विशिष्ट विद्यालय के दृष्टिहीन विकलाग बच्चो तथा एकीकृत विद्यालय के दृष्टिहीन विकलाग बच्चो के समन्वय वातावरण मे कुछ प्रयोग आरोपण किए । ईरविन ने देखा की एकीकृत विद्यालय के बच्चे अपने वातावरण के अनुसार अपने विचारो को निर्माण करते है । जबकि विशिष्ट विद्यालय के बच्चे अपने वातावरण के अनुसार व अन्य तरीको से विचारो का निर्माण करते है ।

इस शोध मे प्रतिवर्ष 30 बच्चो का जिसमे 15 दृष्टिहीन बच्चे विशिष्ट विद्यालय के तथा 15 बच्चे एकीकृत विद्यालय से लिये गये थे । इस शोध से यह निष्कर्ष निकाला गया कि विशिष्ट विद्यालय तथा एकीकृत विद्यालय के दृष्टिहीन बच्चो मे विशिष्ट विद्यालय के दृष्टिहीन बच्चे ज्यादा समय खेल मे लगाते थे। और एक क्रिया से दूसरी क्रिया मे परिवर्तन मे बहुत कम समय लगाया ।

(3) त्रिवेदी रोहित 1986–87

त्रिवेदी ने भारत के म0 प्र0 राज्य के भोपाल शहर से दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थीयो के पठण और श्रवण बोध का अध्ययन किया । इस शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर दृष्टिहीन विद्यार्थी और सामान्य विद्यार्थी से पढने व श्रवण बोध का अध्ययन करना था । इस शोध कार्य मे 91 विद्यार्थी का चयन किया गया । जिसमे 70 विद्यार्थी सामान्य और दृष्टिहीन विद्यार्थी 21 लिए थे । इस शोध कार्य का यह निष्कर्ष निकला की सामान्य विद्यार्थियो का कक्षा के बढने के साथ ही अर्थात कक्षा 5 से कक्षा 6वी, कक्षा 6 वी, कक्षा 7वीं, मे पठन व श्रवण बोध बढता जाता है । किन्तु दष्टिहीन विद्यार्थी का पठन व श्रवण बोध कम बढता हुआ देखा गया ।

(4) तिवारी सरिता 1997–98 –

तिवारी ने भारत के म0प्र0 राज्य के भोपाल शहर से 'सामान्य एव विकलाग' विद्यार्थीयो की समेकित शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन किया । इस शोध का उद्देश्य सामान्य विद्यार्थीयो से विकलाग विद्यार्थीयो की समेकित शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन करना था । इस शोध कार्य मे न्यादर्श 4 विद्यालयो से 30 विद्यार्थियो को लिया गया । जिसमे 15 सामान्य और 15 विकलाग विद्यार्थी लिये गये थे । इस शोध से यह निष्कर्ष निकला की दृष्टिहीन व सामान्य विद्यार्थी सकारात्मक अभिव्यक्ति से है क्योकि

सामान्य विकलाग विद्यार्थी प्राकृतिक व्यवहार के अतर्गत साथ–2 अध्ययन करना चाहते है, विकलागता जिसमे बाधक नही हैं ।

(5) बैनर्जी 1988 –

बैनर्जी ने 1988 मे पश्चिम बगाल के माध्यमिक विद्यालय मे एकीकृत शिक्षा पा रहे दृष्टिहीन विद्यार्थी की समस्या पर अध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य सामान्य कक्षा मे अध्ययनरत दृष्टिहीन विद्यार्थी की समस्या का अध्ययन किया। इस समस्या पर स्वतत्र रूप से अध्ययन किया गया है।